Topic :- Positivism of August Comte

कॉम्ट को प्रत्यक्षवाद का जन्मदाता कहा जाता है। इनकी अनेक अवधारणाएँ प्रत्यक्षवादी सिद्धांत पर आधारित हैं। कॉम्ट के अनुसार प्रत्यक्षवाद का अर्थ वैज्ञानिक है। इनका विचार है कि समग्र ब्रह्मांड अपरिवर्तनीय प्राकृतिक नियमों द्वारा व्यवस्थित तथा निर्धारित होता है और यदि इन नियमों को हम समझना है तो धार्मिक या तात्विक आधारों पर नहीं अपितु विज्ञान की विधियों द्वारा ही समझा जा सकता है। वैज्ञानिक विधियों में कल्पना का कोई स्थान नहीं, ये तो निरीक्षण, परीक्षण, प्रयोग और वर्गीकरण की एक व्यवस्थित कार्य प्रणाली होती है। इस प्रकार निरीक्षण, परीक्षण, प्रयोग और वर्गीकरण पर आधारित वैज्ञानिक विधियों के द्वारा सबकुछ समझना और उससे ज्ञान प्राप्त करना ही प्रत्यक्षवाद है।

कॉम्ट का कथन है कि अनुभव, निरीक्षण, प्रयोग तथा वर्गीकरण की व्यवस्थित कार्य-प्रणाली द्वारा न केवल प्राकृतिक घटनाओं का ही अध्ययन संभव है बल्कि समाज का भी, क्योंकि समाज भी प्रकृति का एक अंग है। जिस प्रकार प्राकृतिक घटनाएं कुछ निश्चित नियमों पर आधारित होती है, उसी

Scanned with CamScanner

प्रकार प्रकृति के क्षेत्र के रूप में, सामाजिक घटनाएं भी कुछ निश्चित नियमों के अनुसार घटित होती हैं। जिस प्रकार पृथ्वी की गति, ऋतु परिवर्तन, चाँद और सूरज का आवागमन, दिन और रात का होना आदि प्राकृतिक घटनाएं आकस्मिक नहीं हैं, बल्कि कुछ सुनिश्चित नियमों द्वारा निर्देशित होती हैं, उसी प्रकार मानवीय या सामाजिक घटनाएं भी आकस्मिक नहीं होतीं, वे भी कुछ सामाजिक नियमों के अंतर्गत आती हैं। अतः सामाजिक घटनाएं किस प्रकार घटित होती हैं या उनका क्या क्रम व गति हो सकती है, इसका अध्ययन यथार्थ रूप से संभव है। यही प्रत्यक्षवाद का प्रथम आधारभूत सिद्धांत है।

प्रत्यक्षवाद की दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह अपने को धार्मिक और तात्विक विचारों से दूर रखने का प्रयत्न करता है, क्योंकि इनकी अध्ययन-प्रणाली वैज्ञानिक कदापि नहीं हो सकती। प्रत्यक्षवाद कल्पना या ईश्वरीय महिमा के आधार पर नहीं, बल्कि निरीक्षण, परीक्षण, प्रयोग और वर्गीकरण की व्यवस्थित कार्य-प्रणाली के आधार पर सामाजिक घटनाओं की व्याख्या करता है। एक उदाहरण के द्वारा प्रत्यक्षवाद की इस विशेषता को समझाते हुए डॉ० ब्रजेश ने लिखा है कि यदि कोई व्यक्ति संखिया खाकर मर जाता है तो इस घटना की व्याख्या धर्मवादी, तत्वज्ञानी और वैज्ञानिक या प्रत्यक्षवादी तीनों ही अलग-अलग ढंग से करेंगे क्योंकि इन सबका दृष्टिकोण भी भिन्न-भिन्न है। धर्मवादी उस व्यक्ति के मरने को एक दैवीय विधान मानते हुए यह कहेगा कि यही ईश्वर की इच्छा थी। इसके विपरीत एक तत्वज्ञानी यही कहेगा

कि मिलन और बिछोह एक स्वाभाविक नियम है और मृत्यु एक ऐसा अंतिम बिछोह है जिसके बिछुड़कर फिर नहीं मिला जाता। परंतु इसी मृत्यु के सम्बन्ध में एक वैज्ञानिक का मत और उसकी कार्य-प्रणाली उपर्युक्त दोनों मतों से बिल्कुल भिन्न होगी यदि एक डॉक्टर से यह कहा जाए कि एक व्यक्ति संखिया खाकर मर गया है तो डॉक्टर मृत व्यक्ति का स्वयं जाकर वास्तविक निरीक्षण व परीक्षण करेगा और संखिया के तत्वों का विश्लेषित करता हुआ उस व्यक्ति पर संखिया के प्रभाव को देखेगा और तब कहीं उस मृत्यु के सम्बन्ध में अपनी रिपोर्ट देगा। अतः स्पष्ट है कि वैज्ञानिक निरीक्षण परीक्षण और वर्गीकरण की व्यवस्थित कार्य-प्रणाली के आधार पर अपना अध्ययन कार्य को करते हैं और उसी से किसी विषय के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करते हैं, यही प्रत्यक्षवाद है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रत्यक्षवाद किसी निरपेक्ष विचार को स्वीकार नहीं करता है क्योंकि सामाजिक जीवन में परिवर्तन उसी प्रकार स्वाभाविक है जिस प्रकार प्राकृतिक जगत में। समाज या सामाजिक घटनाओं की यह गतिशीलता कुछ प्राकृतिक नियमों, न कि किसी प्रकार की इच्छा द्वारा निर्देशित व संचालित होती है।

Scanned with CamScanner